खंड: 6, अंक: 01 जनवरी 2023 DELHIN28953

संश्लेषण

सी जी एस मासिक पत्रिका

भारतीय सांस्कृतिक उत्थान बनाम राजनीतिक अभियान

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

दिल्ली विश्वविद्यालय

संपादक

प्रोफेसर सुनील कुमार

निदेशक, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: director@cgs.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://cgs.du.ac.in/directorMessage.html

संपादक मंडल

डॉ रमेश कुमार भारद्वाज

सहायक आचार्य, सरकारी पी.जी कॉलेज, जीवाजी विश्वविद्यालय, श्योपुर पाली रोड, मध्य प्रदेश, पिन कोड-476337
संयुक्त निदेशक, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: rkbhardwaj1@cgs.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://www.mphighereducation.nic.in

डॉ महेश कौशिक

सहायक आचार्य, श्री अरबिंदो कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017
अध्येता, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: mkaushik@cgs.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://www.aurobindo.du.ac.in

डॉ संध्या वर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर, श्यामलाल कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय, जी. टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110032
अध्येता, वैश्विक अध्ययन शोध केंद्र (पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र, डीसीआरसी) एआरसी बिल्डिंग गुरु तेग बहादुर मार्ग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-110007

ई-मेल आई डी: sverma@shyamlale.du.ac.in

प्रोफाइल लिंक: https://shyamlale.du.ac.in/wp-content/uploads/2021/11/sandhya-Verma-Political-Science.pdf

डॉ अभिषेक नाथ

सहायक आचार्य, एमएलटी कॉलेज, सहरसा; बी एन मंडल विश्वविद्यालय, मधेपुरा, बिहार।

ई-मेल आई डी: tuesdaytrack@gmail.com

प्रोफाइल लिंक: https://bpsm.bihar.gov.in/Assets2022/AssetDetails.aspx?P1=2&P2=12&P3=239&P4=3

© सीजीएस2024

संश्लेषण

सांस्कृतिक उत्थान बनाम राजनीतिक अभियान

अनुक्रमिका

संपादकीय

1. सांस्कृतिक उत्थान बनाम राजनीतिक अभियानः अध्ययन व विश्लेषण
   – डॉ महेश कौशिक 1–6
2. भारतीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान का विमर्श और राजनीतिक अभियान की दुर्बलताएँ
   – निशांत यादव 7–12
3. राजनीतिक अभियानः एक ऐतिहासिक अध्ययन– सृष्टि 13–16
4. भारतीय सांस्कृतिक उत्थान बनाम राजनीतिक अभियान
   – उत्तम त्रिपाठी 17–22
5. भारतीय संस्कृति बनाम् भारत जोड़ो यात्रा – सर्विष्ठा जाट 23–26

सम्पादकीय

निरंतरता, गुणवत्ता एवं महत्ता पर केन्द्रित सामरिक वाद–विषयों पर युवा शोधार्थियों से लेख आमंत्रण एवं प्रकाशन समसामयिक सामाजिक विज्ञान की एक महत्वपूर्ण चुनौती रहा है। प्रकाशन के इन महत्वपूर्ण सरोकारों और चुनौतियों के आलोक में वैश्विक अध्ययन केंद्र अपनी मासिक पत्रिका, संश्लेशण के 54वें अंक को पाठकों के समक्ष प्रेषित करते हुए अत्यंत हर्ष और उल्लास का अनुभव कर रहा है। पाँच वर्षों से प्रकाशन की इस अकादमिक यात्रा में केंद्र एक परिवार के रूप में समस्त शोधार्थियों, शिक्षार्थियों एवं विद्यार्थियों के सामूहिक प्रयासों से सामाजिक विज्ञान के प्रति अपने संकल्पित ध्येय को साकार करता आ रहा है। निरंतरता की इस कडी में संश्लेशण का यह अंक शोध के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एवं दृढ़निश्चित्तता को प्रदशित करने का ही एक सामान्य प्रयास है।

भारतीय सांस्कृतिक उत्थान का उद्देश्य कला, परंपराओं, सभ्यता तथा नैतिक मूल्यों की समृद्ध विरासत को पोषित व संरक्षित करना है जो हमारे राष्ट्र को परिभाषित करते हैं। यह एक ऐसे समाज को बढ़ावा देने के बारे में है जो न केवल आर्थिक रूप से समृद्ध हो अपितु सांस्कृतिक रूप से जीवंत व सामाजिक रूप से एकजुट भी हो। दूसरी ओर, राजनीतिक अभियान प्रायरू शासन, नीतियों व चुनावी रणनीतियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिनका उद्देश्य सत्ता पर अधिग्रहण करना होता है। राष्ट्र की दिशा को आकार देने के लिए महत्वपूर्ण होते हुए भी, राजनीतिक अभियान प्रायरू सांस्कृतिक विकास के महत्व को गौण कर देते हैं।

भारतीय सांस्कृतिक उत्थान का सार सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों के माध्यम से समावेशिता, विविधता व एकता को बढ़ावा देना है। यह समुदायों को सशक्त बनाता है, ऐतिहासिक और सभ्यतागत विरासतों को संरक्षित करता है तथा लोगों के मध्य अस्मिता की भावना को बढ़ावा देता है। सांस्कृतिक संस्थानों में निवेश करके, पारंपरिक कलाओं को बढ़ावा देकर व सांस्कृतिक उत्सव मनाकर, हम अपने समाज को सुदृढ़ करते हैं।

तथापि, जब राजनीतिक अभियान दीर्घकालिक सांस्कृतिक निवेशों पर अल्पकालिक लाभ को प्राथमिकता देते हैं। चुनावी उद्देश्यों के लिए सांस्कृतिक प्रतीकों व आख्यानों का उपयोग करने का प्रलोभन सांस्कृतिक उत्थान की दिशा में वास्तविक प्रयासों को क्षीण कर सकता है। राजनीतिक अभियान और सांस्कृतिक पहलों के मध्य एक उचित संतुलन और सामंजस्य का होना महत्त्वपूर्ण है,

जिसके परिणामस्वरूप किसी भी प्रकार की पक्षपात के बिना सांस्कृतिक उत्थान की दिशा में बेहतर प्रयास संभव हो पाए।

अतः नीति निर्माताओं, बुद्धिजीवियों व वृहत स्तर पर समाज के लिए सांस्कृतिक व राजनीतिक अभियानों के मध्य सहजीवी संबंध को पहचानना अनिवार्य है। एक राष्ट्र जो प्रभावी शासन सुनिश्चित करते हुए अपनी सांस्कृतिक विविधता का सम्मान व प्रचार करता है, वह चुनौतियों का सामना करने और सतत विकास प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम रूप से सुसज्जित होता है। अतः राजनीतिक प्रगति के साथ–साथ भारत की सांस्कृतिक समृद्धि को पोषित करने की अपनी प्रतिबद्धता की पुष्टि करनी चाहिए। यह सामंजस्य न केवल हमारे समाज को समृद्ध करने की दिशा में कार्य करेगा अपितु राष्ट्र एक ऐसे भविष्य की ओर भी ले जाएगा जहाँ हर नागरिक सामंजस्यपूर्ण व सांस्कृतिक रूप से समृद्ध वातावरण में विकसित होगा।

राष्ट्रीय स्तर पर विषय की महत्ता तथा राज्य स्तर पर विमर्श की समसामयिकता को ध्यान में रखते हुए केंद्र ने 'भारतीय सांस्कृतिक उत्थान बनाम राजनीतिक अभियान' विषय पर लेख आमंत्रित किये। पाँच उत्कृष्ट लेखों को सम्पादकीय मंडल ने चयनित किया जो आप सभी के समक्ष एक प्रकाशित पत्रिका के रूप में उल्लेखित हो रहे हैं। ये समस्त लेख मौलिक होने के साथ–साथ भारत के राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य के बहुआयामी विषयों को भी संबोधित करते हैं। स्वतंत्र चिंतन पर आधारित लेखकों के विचार उनकी रचनात्मकता, सृजनात्मकता एवं मौलिकता को प्रदर्शित करने का एक सर्वनिष्ठ प्रयास, प्रयत्न और परिणाम है।

संपादक मंडल मंगलवार, 14 फरवरी 2023

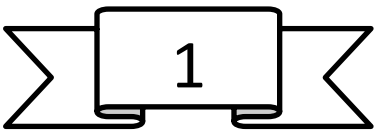

सांस्कृतिक उत्थान बनाम राजनीतिक अभियानः अध्ययन व विश्लेषण

डॉ महेश कौशिक

अध्येता, वैश्विक अध्ययन केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय

अनेक विद्वानों और साहित्यकारों और इतिहासकारों के अनुसार भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृति है। सिंधु घाटी सभ्यता के प्राप्त अवशेषों के आधार पर अनेक यूरोपियन इतिहासकार मानते थे कि भारतीय संस्कृति पाँच हजार वर्ष से अधिक प्राचीन है जबकि भारतीय विद्वानों के अनुसार भारत का सांस्कृतिक उद्भव लाखों वर्ष पूर्व हुआ। हाल ही में पुरातत्व विभाग द्वारा प्राप्त प्रमाणों क आधार पर यह सिद्ध हुआ है कि भारतीय संस्कृति का इतिहास पाँच हजार वर्ष नहीं अपितु इससे कहीं अधिक प्राचीन है। वेदों को इस सृष्टि का प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है। यद्यपि वेदों को धार्मिक ग्रंथ माना जाता है और धर्म तथा संस्कृति में अंतर है। किंतु इसका एक दूसरा पक्ष यह है कि भारतीय संस्कृति का धर्म से गहन संबंध प्राचीन काल से ही रहा है। भारतीय संस्कृति श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों पर आधारित संस्कृति रही है। सर्वे भवंतु सुखिनः से लेकर वसुधैव कुटुंबकम जैसे मूल्य भारतीय संस्कृति का आधार रहे हैं। संसार में कोई भी देश ऐसा नहीं है और ना ही कोई ऐसा संप्रदाय है जिसमें सभी देशों और संप्रदाय के लोगों के कल्याण की कामना की जाती है।

भारतीय संस्कृति केवल मनुष्य के कल्याण तक ही सीमित नहीं है अपितु वह इस प्रकृति के कण–कण में विद्यमान सभी जीवित और गैर जीवित तत्वों के संरक्षण और कल्याण की कामना से कार्य करती है। आज पश्चिमी देश आर्थिक समृद्धि से होते हुए आर्थिक विकास और फिर सतत पोषणीय विकास की अवधारणा तक पहुंचे हैं। किंतु भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही सतत पोषणीय विकास पर कार्य किया जाता रहा है। इसीलिए भारतीय कृषक भूमि को एक वर्ष उपयोग करता था और फिर एक वर्ष के लिए उसे खाली अर्थात परती छोड़ देता था। हरित क्रांति से पूर्व तक भारत में जैविक खाद का ही उपयोग पूर्ण रूप से किया जाता था। भारतीय संस्कृति पेड़, पानी, पत्थर, पहाड़, पशु और पक्षी तक हर जीव ही नहीं निर्जीव तक में उसी सृष्टिकर्ता को देखने की संस्कृति रही है। इसलिए भारतीय संस्कृति प्रकृति के अधिकाधिक दोहन की संस्कृति नहीं है

वह प्रकृति के साथ बेहतर सामंजस्य रखते हुए संपूर्ण सृष्टि के विकास की संस्कृति रही है। संपूर्ण विश्व को इस विचार तक जाने में अभी और लंबी यात्रा तय करनी पड़ेगी।

पिछले लगभग ढाई से तीन हजार वर्षों में संपूर्ण विश्व ने अनेक सभ्यताओं के उद्भव, वैभव और पतन को देखा है। वैदिक काल से लेकर रामायण काल और फिर महाभारत काल तक तथा इसके बाद भी ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी तक भारत का वैभव काल रहा है। जहां सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य अपनी श्रेष्ठतम स्थिति में समाज में व्याप्त रहे। भारतीय संस्कृति का विकास धर्म–दर्शन और मूल्यों से जुड़ा रहा है इसलिए उसमें दृढ़ता और स्थायित्व बना रहा। यही कारण है कि जिस कालखंड में संसार की अनेक सभ्यताओं का पतन हो गया उस काल में भी भारत न संपूर्ण विश्व को ज्ञान की राह दिखाई। यह ज्ञान किन्ही एक या दो विषयों तक सीमित नहीं था अपितु कोई विषय ऐसा नहीं था जो इस ज्ञान से अछूता रहा हो। हमारे ऋषि मुनि जंगलों में बैठकर के ईश्वर का ध्यान करने वाले सामान्य मनुष्य नहीं थे अपितु वह तो उच्च कोटि के दार्शनिक तथा वैज्ञानिक थे। भारतीय संस्कृति ने विश्व को खगोल विज्ञान, गणित, ज्योतिष शास्त्र, आयुर्वेद जैसे अनेक विषयों का ज्ञान प्रदान किया। इसके साथ साथ धर्म, राजनीति और अर्थशास्त्र जैसे विषयों पर भी भारतीय विद्वानों और मनीषियों ने कार्य किया। कुछ लोग कहते हैं कि भारत में अनेक भाषाओं और अनेक प्रकार की मिश्रित संस्कृति के लोग रहते हैं उनमें किसी तरह की कोई समानता नहीं है। क्या वास्तव में यह सही है? क्या कोई ऐसा तत्व है जो अलग–अलग प्रकार की वेशभूषा पहनने वाले अलग प्रकार की भाषा बोलने वाले लोगों को एक करता है?

अन्य शब्दों में कहें तो भारतीय संस्कृति का मूल आधार क्या है? भारतीय संस्कृति का मूल आधार है कि यह धर्म से संचालित होती है। इसलिए चाहे वह हिंदू हो, जैन या सिख, ईसाई या मुस्लिम कहीं ना कहीं सभी के मन में एक भाव बना रहता है कि हमें अपना जीवन धर्म के मूल्यों के अनुसार जीना चाहिए। एक और चीज है जो भारतीय संस्कृति को विशिष्ट बनाती है। और वह है विश्व के किसी भी भाग, किन्हीं भी लोगों और किसी भी देश से जो कुछ भी अच्छा है उसे सीखने और ग्रहण करने लिए सदैव तत्पर रहने की प्रवृत्ति। इसीलिए भौगोलिक दृष्टि से अनेक प्रकार की विविधताएं होने के बाद भी सांस्कृतिक रूप से संपूर्ण भारत एक ही है। इसी कारण से भारतीय न केवल इस देश में अपितु संसार भर के विभिन्न देशों में जहां जहां भी जाते हैं वहां अपनी संस्कृति की विशिष्टता के कारण अपनी एक विशेष पहचान बना लेते हैं और दीर्घकाल में वहां भारतीय संस्कृति पल्लवित और पोषित होने लगती है।

इसके उदाहरण दुनिया भर के अनेक देश है जहां समय–समय पर भारतीय आर्थिक कारणों से गए हैं वहां आज भारतीय संस्कृति की जड़ें गहरी होती जा रही है। मॉरीशस, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका तथा इंग्लैंड जैसे अनेक देशों में भारतीय मूल के लोग अपनी इसी सांस्कृतिक विशिष्टता के कारण अपनी विशेष पहचान रखते हैं। भारतीय संस्कृति का ही प्रभाव है कि दुनिया भर के सभी देशों में भारतीय लोगों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है।

हाल ही में पूरे विश्व पर आए कोरोनावायरस संकट तक पूरे विश्व ने देखा है कि किस प्रकार कुछ देशों ने केवल आर्थिक लाभ के लिए पूरी मानव सभ्यता को पतन के गर्त में धकेलने का कार्य किया तथा वहीं दूसरी ओर भारत जैसे देश ने संपूर्ण विश्व के कल्याण के लिए कार्य किया। आज यह तथ्य सर्व विदित हो गया है कि जो देश अपने आप को महाशक्ति मानता था उसी ने अपने आर्थिक और राजनीतिक लाभ के लिए विश्व में कोरोनावायरस को फैलाया। भारत की आर्थिक स्थिति बहुत मजबूत नहीं थी इसके बाद भी भारत ने न केवल वैक्सीन अपितु अन्य आवश्यक सामग्री भी विश्व के केवल आर्थिक रूप से कमजोर देशों को ही नहीं बल्कि विश्व के ताकतवर समझे जाने वाले देशों को भी उपलब्ध कराई। यही सर्वे भवन्तु सुखिनः और वसुधैव कुटुम्बकम की अवधारणा है। इसलिए भारत पड़ोसी देशों को संकट में डालकर अपने लिए अवसर का निर्माण नहीं करता अपितु स्वयं को कष्ट देकर भी अपने पड़ोसी की चिंता करता है ५

हमारे देश में भी एक लंबा काल रहा है जिसमें सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट को स्पष्ट रूप से देखा और महसूस किया गया है। सामान्य रूप से माना जाता है कि मध्यकाल जिसमें देश के बहुत बड़े भू–भाग पर मुगलों का शासन रहा और उसके बाद फिर अंग्रेजों का शासन रहा, उस काल में सांस्कृतिक मूल्यों में गिरावट आना आरंभ हुआ क्योंकि अन्य सभ्यताओं से जुड़े हुए लोगों ने भारत में ने केवल शासन किया अपितु लंबे समय तक यहां रहने के कारण यहां के सांस्कृतिक मूल्यों को भी प्रभावित किया। किंतु स्वतंत्रता के पश्चात जब देश का बंटवारा सांप्रदायिक आधार पर हुआ तो अनेक मुसलमानों ने संप्रदाय के आधार पर ही उनके द्वारा बनाए गए देश पाकिस्तान में जाना स्वीकार नहीं किया और वह भारत में रहे। ठीक इसी प्रकार अनेक ईसाई भी इसी देश में रह गए। आज यह भी इस राष्ट्र की विशेषता बन गई है कि यह संसार का एकमात्र ऐसा देश है जिसमें संसार के लगभग सभी संप्रदायों का प्रतिनिधित्व करने वाले लोग मिलजुल कर रहते हैं। यह इसलिए संभव है क्योंकि यहां की बहुसंख्यक जनसंख्या आज भी उन्हीं प्राचीन भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ी हुई है जिसे सनातन संस्कृति या हिंदू संस्कृति क नाम से पूरे विश्व में जाना जाता है और सम्मान दिया जाता है।

भारतीय संस्कृति बिना प्राचीन विचारों को खोए प्रत्येक नवीन विचार को आत्ममात कर सकती है, जिसका अंतिम परिणाम यह होता है कि विभिन्न और कभी–कभी विरोधी सांस्कृतिक प्रतिछवियां, धर्म और भाषाएं आपस में सम्मिश्चित और समन्वित होकर एक जीवन व्यवस्था में सुग्रथित हो जाती हैं।

समय–समय पर भारत देश में अनेक राजनीतिक अभियान चले। यदि प्राचीन काल से बात करें तो संभवतः श्री राम की वन यात्रा अपने आप में एक अभियान थी जिसमें उन्होंने सरयू किनारे बसी अयोध्या से लेकर समुद्र पार स्थित लंका तक राक्षसों का सफाया किया और अयोध्या में आदर्श राज्य की स्थापना की। ठीक इसी प्रकार अगर महाभारत काल की बात की जाए तो श्री कृष्ण जी ने पांडवों के सहयोग से इसी प्रकार का एक अभियान चलाया जिसकी परिणीति युद्ध में कौरवों के संपूर्ण नाश के साथ हुई और इसके पश्चात पांडवों ने भारत में एक शक्तिशाली समृद्धशाली शासन की नींव रखी। ईसा से तीन सौ वर्ष पूर्व मगध में कौटिल्य ने भी अपने शिष्य चंद्रगुप्त के माध्यम से इसी प्रकार का अभियान चलाया और भारत की सीमाओं को सुरक्षित किया जिसके कारण से लंबे समय तक विदेशी आक्रमणकारी भारत पर आक्रमण की योजना नहीं बना सके और भारतवर्ष लंबे समय तक सुरक्षित रहा। वर्तमान समय में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान भी अनेक प्रकार के अभियान स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वाले दलों ने चलाए। उदाहरण के रूप में स्वदेशी आंदोलन के दौरान विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का अभियान चलाया गया।

स्वतंत्रता के पश्चात् भी अनेक राजनीतिक दलों ने सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर पर अनेक अभियान चलाएं हैं। जैसे नदियों की सफाई से लेकर प्रधानमंत्री द्वारा हाल ही में चलाया गया स्वच्छता अभियान। कांग्रेस ने हाल ही में इसी प्रकार का एक अभियान आरंभ किया जिसका नाम भारत जोड़ो यात्रा रखा गया। नाम से ऐसा प्रतीत होता है की इसका उद्देश्य भारत के विभिन्न राज्यों में रहने वाले भिन्न–भिन्न भाषा और वेशभूषा वाले लोगों को एक करना है। किंतु प्रश्न उठता है की स्वतंत्रता के 75 वर्ष बाद कांग्रेस को भारत जोड़ने की आवश्यकता क्यों महसूस हुई? कांग्रेस के अपने लगभग 60 वर्षों के शासनकाल में कांग्रेस ने भारत को जोड़ने के लिए किस प्रकार के प्रयास किए? 90 के दशक में जब कश्मीर में हिंदुओं का पलायन हो रहा था तभी आवश्यकता क्यों महसूस नहीं? वास्तव में 2014 के बाद कॉन्ग्रेस केंद्र की राजनीति में लगातार कमजोर होती चली गई।

2014 तथा 2019 दोनों ही लोकसभा चुनावों में कांग्रेस अपने सभी प्रयासों के बाद भी तिहाई अंकों में अपनी सीटों की संख्या को नहीं ले जा सकी, इसके साथ साथ अनेक राज्यों में भी कांग्रेस की

स्थिति निरंतर कमजोर हुई है। इसी कमजोर स्थिति से पार्टी को निकालने के लिए कांग्रेस द्वारा यह अभियान आरंभ किया गया। किंतु क्या 2024 में कांग्रेस पार्टी को यह संपूर्ण विपक्ष को इसका लाभ मिल पाएगा, यह तो 2024 का लोकसभा चुनाव परिणाम ही बता पाएगा। किंतु इतना सत्य है कि भारतवर्ष अपनी सभी विविधताओं के बाद भी प्राचीन काल से लेकर आज तक यदि एक है तो उसका कारण वह सनातन संस्कृति है जिसके माध्यम से प्रत्येक भारतीय अपनी जड़ों से सदैव जुड़ा रहता है। इस संस्कृति के आधारभूत मूल्य सभी भारतीयों को एक दूसरे से जोड़ रहते हैं। भाषा और वेशभूषा की भिन्नता उनमें विविधता तो पैदा करती है किंतु भावनात्मक स्तर पर सभी लोग अपने आप को भारतीय संस्कृति से जोड़कर देखते हैं और भारत देश के नाम पर वह सभी सदैव एक बने रहते हैं। यही भारत का सांस्कृतिक उत्थान है जिससे आज संपूर्ण विश्व आश्चर्यचकित है। इतनी अधिक विभिन्नताओं के बाद भी भारत स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण करने पर प्रगति की ओर तीव्र गति से अग्रसर है। इसमें एकात्मता की भावना का विकास करने के लिए किसी राजनीतिक अभियान की आवश्यकता नहीं अपितु सामाजिक स्तर पर उस एकात्मता का बोध कराने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

- यूनियन सृजन– भारतीय संस्कृति एवं परंपरा (विशेषांक)अप्रैल–जून, (2019)
- डॉक्टर शंभू नाथ पांडे– भारतीय जीवन और संस्कृति, पष्ठ संख्या
- https://bharatdiscovery.org/india
- https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.481873/page/9/mode/2up?view=theater
- https://www.drishtiias.com/hindi/model-essays/unique-form-of-indian-culture

♦♦♦♦♦

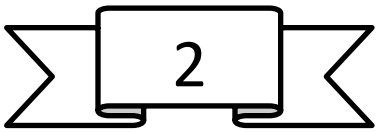

भारतीय सांस्कृतिक पुनरुत्थान का विमर्श और राजनीतिक अभियान की दुर्बलताएँ

निशांत यादव

सहायक प्रोफेसर, राजा बलवंत सिंह महाविद्यालय, आगरा

संस्कृति शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम एडवर्ड बी. टेलर द्वारा अपनी पुस्तक, प्रिमीटिव कल्चर (1871) में किया गया था, जो अग्रणी अंग्रेज मानवशास्त्री थे। टेलर ने संस्कृति शब्द का प्रयोग सार्वभौमिक मानव क्षमता के संदर्भ में किया। यह संपूर्ण रूप से जटिल है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, नीति, नैतिकता, कानून, परंपराएं, लक्षण, प्रथा और समाज के सदस्य के रूप में मनुष्य द्वारा अर्जित अन्य क्षमताएं और आदतें शामिल हैं। संस्कृति जीवित रहने के लिए शक्तिशाली मानव उपकरण है, लेकिन यह एक नाजुक घटना है। यह लगातार बदल रही है और आसानी से लुप्त हो जाने की स्थिति में रहती है क्योंकि यह केवल विचारों और परंपराओं में मौजूद रहती है। इस प्रकार संस्कृति सामाजिक विषयों के प्रति समाज के लोगों के साझा मनोवैज्ञानिक अभिविन्यास का प्रतिनिधित्व करती है। एक समाज के लोग अधिक या कम सामाजिक विषयों के प्रति झुकाव का अलग स्वरूप प्राप्त करते हैं और बनाते हैं। यह वास्तव में समाज के लोगों की संस्कृति या श्सामाजिक संस्कृतिश है और श्राजनीतिक संस्कृतिश इस सामाजिक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। राष्ट्रवाद का विकास केवल युद्धों और क्षेत्रीय विस्तार से नहीं हुआ। राष्ट्र के विचार के निर्माण में संस्कृति ने एक अहम भूमिका निभाई। कला, काव्य, कहानियों–किस्सों और संगीत ने राष्ट्रवादी भावनाओं को गढ़ने और व्यक्त करने में सहयोग दिया। रूमानीवाद को देखें जो एक ऐसा सांस्कृतिक आंदोलन था जो खास तरह की राष्ट्रीय भावना का विकास करना चाहता था। आम तौर पर रूमानी कलाकारों और कवियों नें तर्क–वितर्क आर विज्ञान के महिमामंडन की आलोचना की और उसकी जगह भावनाओं, अंतदृष्टि और रहस्यवादी भावनाओं पर जोर दिया। इनका प्रयास था कि एक साझा–सामूहिक विरासत की अनुभूति और एक साझा सांस्कृतिक अतीत को राष्ट्र का आधार बनाया जाय।

भारत अतिप्राचीन सांस्कृतिक राष्ट्र है इसकी पुष्टि इसके सैंधव सभ्यता के तहत प्राचीन सभ्यतागत होने, धार्मिक और पौराणिक साहित्यों, ऐतिहासिक साहित्यों जिसमें भारतीय और विदेशी दोनों साहित्य सम्मिलित हैं और सबसे महत्वपूर्ण पुरातात्विक साक्ष्य के तौर पर प्रस्तर शिलालेख, मंदिर, मठ, लौह पट्टिकाएँ, गुफा अभिलेख आदि से होती है। लेकिन इन तथ्यों के मध्य यह भी ऐतिहासिक सच्चाई है कि भारत में लगभग चौथी शताब्दी से ही बाह्य आक्रमण की शुरुआत हो चुकी थी। हूण, शक, कुषाण, पल्लव, तुर्क, मुगल और अंत में ब्रिटिश हुकूमत का शासन इस बात का साक्षी है कि इस प्राचीन राष्ट्र भारत नें कई बाह्य आक्रमणों को झेलते हुए अपने अस्तित्व को बचाए रखा। इन बाह्य आक्रमणकारियों नें भारत में शासन संचालन के दौरान अपनी देशज संस्कृति को सदैव विस्तारित करने की कोशिश की। जिसकी परिणति के तौर पर हम देखते हैं कि प्राचीन भारतीय संस्कृति के साथ आक्रमण के पश्चात बाहर से आयी सांस्कृतिक परमपराओं नें अपनी देशज सांस्कृतिक सर्वोच्चता को स्थापित करने के लिए उस विशेष बाह्य शैली के कला को अत्यधिक बढ़ावा दिया और भारतीय संस्कृति को नेपथ्य में ढकलने का कार्य किया। भारतीय सांस्कृतिक उत्थान की अवधारणा इसी नेपथ्य को मुख्यधारा में शामिल करने की संकल्पना है। इसकी शुरुआत वर्तमान समय में नहीं हुई थी बल्कि औपनिवेशिक काल में ही ब्रिटिश भाषाविद विलियम जोंस नें इस क्षेत्र में पहल की शुरुआत कर थी।

सन 1783 में विलियम जोंस ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा स्थापित सुप्रीम कोर्ट में जूनियर जज के रूप में तैनाती के तौर पर कलकत्ता आते हैं। जोंस भाषविद थे भारत आते ही उनकी रुचि संस्कृति, फारसी भाषाओं में बढ़नी प्रारंभ हो जाती है। जिसके लिए वह संस्कृत के विद्वानों से प्रतिदिन घंटों संस्कृत की बारीकियाँ, व्याकरण, संस्कृत काव्यों का अध्ययन करने लगे। कुछ ही समय में उन्होंने कानून, दर्शन, धर्म, राजनीति, नैतिकता, अंकगणित, चिकित्सा विज्ञान और अन्य विज्ञानों की प्राचीन भारतीय पुस्तकों का अध्ययन प्रारम्भ कर दिया। जोंस भारत के प्रति एक विशेष प्रकार का दृष्टिकोण रखते थे। वे भारत और पश्चिम, दोनों की प्राचीन संस्कृतियों के प्रति गहरा आदर भाव रखते थे। उनका मानना था कि भारतीय सभ्यता प्राचीन काल में अपने वैभव के शिखर पर थी परंतु बाद में उसका पतन होता चला गया। उनकी राय में, भारत को खोजना और समझना बहुत जरूरी था। उनका मानना था कि हिंदुओं और मुसलमानों के असली विचारों व कानूनों को इन्हीं रचनाओं के जरिए समझा जा सकता है और इन रचनाओं के पुनः अध्ययन से ही भारत के भावी विकास का आधार पैदा हो सकता है। लेकिन वुडस्पैच नीति और लॉर्ड मैकाले के यूरोपीय ज्ञान के प्रति सर्वोच्चता का दंभ और भारतीयध्एशियाई ज्ञान के प्रति पूर्वाग्रह नें भारतीय संस्कृति के उत्थान की गति को न केवल अवरुद्ध कर दिया बल्कि पिछले बाह्य शासनकारियों की अपेक्षा

जिन्होंने देशज भारतीय संस्कृति को नेपथ्य में छोड़ दिया था, से दो कदम और आगे बढ़ते हुए भारतीय संस्कृति को औपनिवेशिक शासन के बलबूते पिछड़ी, अवैज्ञानिक, अतार्किक, रूढ़िवादी आदि घोषित करने की भरपूर कोशिस की।

प्राच्यवादी विचारकों के बढ़ते प्रभाव, ए.एल. बाशम, मैक्स मूलर आदि के साहित्यों, सर कनिंघम और कर्नल जेम्स टॉड आदि के पुरातात्विक खोंजों नें और महात्मा बुद्ध, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी आदि के विचारों की वैश्विक स्तर पर स्वीकारोक्ति नें मैकाले और उनसे प्रभावित विद्वानों के भारतीय संस्कृति के बारे में व्याप्त पूर्वाग्रह को समाप्त करने का श्रमसाध्य कार्य किया। स्वतंत्रता पश्चात अब निर्वाचित सरकारों की जिम्मेदारी थी कि वे गौरवशाली भारतीय संस्कृति को पुनर्स्थापित करने का कार्य करें। लेकिन सांस्कृतिक पुनरुत्थान की जगह शोषणकारी औपनिवेशक दौर से उपजी निर्धनता, अशिक्षा, भुखमरी, स्वास्थ्य संकटों से जूझ रहे निवासियों को इन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने पर तत्कालीन सरकारों नें अधिक बल दिया। इक्कीसवीं सदी के आगमन के पूर्व ही हम अपने देश में मानवीय आवश्यकताओं को पूर्ण करने में कहीं–न–कहीं या यूँ कहें की एक बड़े स्तर पर सफल हुए हैं। जिसके पश्चात् अब हमारा ध्यान पुनः अपने सांस्कृतिक उत्थान के बिंदुओं पर जाता है जिसको पूर्ण करना सरकार की अन्य तमाम जिम्मेवारियों की तरह एक महत्वपूर्ण जिम्मेवारी है।

वर्तमान सरकार नें इस क्रम में कुछ महत्वपूर्ण कार्य किए भी हैं। उदाहरण के तौर पर राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली में कुछ परिवर्तन उलेखनीय हैं। सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन ऐतिहासिक इंडिया गेट के पास लगी ब्रिटिश सम्राट जार्ज पंचम की मूर्ति को हटाकर वहां महान स्वतंत्रता सेनानो सुभाषचंद्र बोस की प्रतिमा की स्थापना करना है। सरकार के इस प्रयास नें हमें हर समय औपनिवेशिक दासता के बोध से बंधी अपनी राष्ट्रीय छवि से बाहर निकालने का कार्य किया है। इसी तरह राजपथ का नाम परिवर्तित करके कर्तव्यपथ करना, इस बात का द्योतक है की भारत में राजतंत्रात्मक व्यवस्था नहीं बल्कि लोकतंत्रात्मक शासन प्रणाली कार्य रही है जिसमें सरकार का कार्य निर्देश पारित करना नहीं वरन अपने जन प्रतिनिधियों से प्राप्त सत्ता के द्वारा उनके प्रति अपने शासकीय कर्तव्यों का निर्वहन करना है। सात रेसकोर्स का नाम बदलकर लोककल्याण मार्ग करना भी यह दर्शाता है कि शासन के नेतृत्व का तात्पर्य अब अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं के लिए सरकारी धन, संपति आदि का उपयोग करना नहीं रह गया बल्कि इसका उपयोग उन लोगों के कल्याण के लिए नीति निर्माण और क्रियान्वयन में होगा जिन्होंने शासन की यह बागडोर आपको सौंपी है।

सांस्कृतिक उत्थान से समबंधित उपर्युक्त तथ्य तो सकारात्मक और आवश्यक प्रतीत होते हैं। लेकिन इस विमर्श में और आगे बढ़े तो हम पाते हैं कि यह विमर्श भी राजनीतिक अभियानों, विरोधाभासों से अछूता नहीं है। जब हम वैश्विक स्तर पर भारत के सांस्कृतिक उत्थान की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य होता है कि विश्व में भारत को कैसे और किस समय से जाना जाय। उत्तर प्रदेश के वर्तमान मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ नें एक टीवी इंटरव्यू में कहा की भारत की पहचान ताजमहल से नहीं वरन इसकी अति प्राचीन सांस्कृतिक गौरव से होनी चाहिए। ताज महल विश्व के साथ आश्चर्यों में शामिल है। लेकिन इसका निर्माण मध्यकालीन भारत में आज से महज चार–पाँच सौ वर्ष पूर्व ही हुआ था। जबकि भारत के गौरव की गाथा हम ईसा पूर्व से सुनते, पढ़ते, और शिलालेखों के माध्यम से देखते हैं। योगी आदित्यनाथ ताज महल को भारत का एकमात्र पहचान मानने से इंकार करते हैं लेकिन विडंबना देखिए की आज जब इस वर्ष भारत को ळ–20 की अध्यक्षता का सुअवसर प्राप्त हुआ है तो उसमें विश्व भर से जो भी प्रशासनिक और राजनीतिक डेलीगेट्स आ रहे हैं उनको प्रदेश भ्रमण के नाम पर उन्हीं स्थलों पर ले जाया जा रहा है जिसे मुख्यमंत्री महोदय प्राथमिक भारतीय संस्कृति का द्योतक मानने से मना कर चुके हैं। कोई भी विदेशी आगंतुक यदि देश में आता है तो उनको अपने देश से अवगत कराने की सम्पूर्ण जिम्मेवारी हमारी होती है। भारत की यात्रा पर आए विदेशी लोगों को भारत के बारे में वही जानकारी प्राप्त हो सकेगी जो हम उन्हें देना चाहेंगे। राजनीति अभियान की दुर्बलता यही साबित होती है कि एक तरफ तो हम यह कहते हैं कि हम अपने प्राचीन मूल्यों, संस्कृतियों को पुनर्स्थापित करना चाहते हैं लेकिन जब उनकी पुनर्स्थापना की बात आती है तो उसक लिए किए जाने वाले सार्थक प्रयासों के क्रम में हम बहुत पीछे दृष्टिगत होते हैं जो इस कार्य में हमारी ईच्छाशक्ति में कमी को दर्शाता है।

उदाहरण के तौर पर देखें तो आज इस्कान समूह, जगतगुरु कृपालु परिषद के माध्यम से पूरे विश्व में श्री कृष्ण के अनुयायियों की भरमार है। भारत में जो भी विदेशी सैलानी आते हैं वो बौद्ध स्थलों पर जाएँ या न जाएँ वृंदावन में श्री कृष्ण के दर्शन हेतु अवश्य आते हैं। आगरा के ताजमहल घूमने वाला हर पर्यटक वृंदावन में श्री कृष्ण के दर्शन हेतु अवश्य जाता है। आगरा में अभी तक इस वर्ष साठ लाख विदेशी पर्यटकों नें ताजमहल का दीदार किया। चूँकि ताजमहल में भारतीय पुरातत्व विभाग से टिकट लेकर ही आप उसका दीदार कर सकते हैं इस वजह से वहां आने वाले पर्यटकों की संख्या के बारे में आँकडें प्राप्त हो जाते हैं लेकिन वृंदावन में श्री कृष्ण के दर्शन हेतु किसी टिकट की व्यवस्था नहीं है अतः यहाँ आने वाले पर्यटकों के बारे में निश्चित आँकड़े नहीं मिल पाते हैं। फिर भी वहाँ पहुँचने और रहने वाली भीड़ स यह कयास लगाया जाता है कि वहाँ आगरा

के ताजमहल से कहीं अधिक विदेशी पर्यटक श्री कृष्ण के दर्शन हेतु आते हैं। कुछ यही स्थिति वाराणसी की है जो भारत की अति प्राचीन धार्मिक नगरी हैं और जहां प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में विदेशी पर्यटक विश्वनाथ मंदिर, संकट मोचन मंदिर, गंगा आरती, संस्कृति की शिक्षा आदि के लिए आते हैं। फिर भी राजनीतिक दुर्बलता देखिए की ळ–20 की अध्यक्षता के दौरान आने वाले विश्व भर से प्रशासनिक और राजनीतिक डेलीगेट्स को हम इन प्राचीन स्थलों को न दिखाकर वही पुराने मध्यकालीन और आधुनिक संस्कृति के पर्याय आधरित स्थलों का भ्रमण करा रहे हैं जिनसे की हम आगे बढ़ना चाहते हैं।

निष्कर्ष के तौर पर यही कहना होगा की यदि सरकार को वास्तविकता में प्राचीन भारत के गौरव और संस्कृति को विश्व भर में फिर से पुनर्स्थापित करना है तो उसे दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ निर्णय लेने होंगे। अपनी सभी विदेशी राजनयिकों के साथ होने वाली संगोष्ठियों को हैदराबाद की जगह बनारस, मथुरा, गया, पाटलिपुत्र आदि सांस्कृतिक केंद्रों में आयोजित करना होगा। विदेशी पर्यटकों को भीम बैठका, बराबर की पहाड़िया, अजंता–एलोरा की गुफाओं, सास–बहु का मंदिर, तेली का मंदिर, दक्षिण भारत और उत्तर भारत के ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्थलों की तरफ आकर्षित करना होगा साथ ही साथ भारतीय पुरातत्व विभाग को इन्हें आकर्षक पर्यटन स्थलों में परिवर्तित करना होगा। रेल मंत्रालय और सड़क एवं परिवहन मंत्रालय को औद्योगिक लाभ के उद्देश्य से बनाए जा रेलवे परिवहन और एक्सप्रेस वे, हाई वे के साथ ही साथ इन प्राचीन धरोहरों को भी भारत के दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, हैदराबाद, चेन्नई आदि महानगरों से जोड़ना होगा ताकि यहाँ पर्यटन को बढ़ावा मिल सके और भारतीय मन–मस्तिष्क के साथ ही साथ विदेशी पर्यटकों के मन मस्तिष्क में भी भारत की प्राचीन संस्कृति का भान उद्दीप्त हो सके।

संदर्भ सूचीः

महापत्रा, सीताकांत (2015). शब्द, समय और संस्कृति. नई दिल्लीः भारतीय ज्ञानपीठ

हुसैन, आबिद (2011). भारत की राष्ट्रीय संस्कृति. नई दिल्लीः राष्ट्रीय पुस्तक न्यास

♦♦♦♦♦

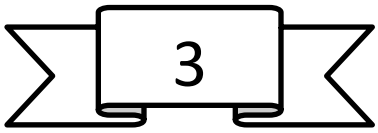

राजनीतिक अभियानः एक ऐतिहासिक अध्ययन

सृष्टि

शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

राजनीतिक अभियान एक संगठित प्रयास है जो एक विशिष्ट समूह के अंतर्गत निर्णय लेने की प्रगति को प्रभावित करने का प्रयास प्रयास करता है। लोकतंत्र में राजनीतिक अभियान प्रायः चुनावी अभियानों को संदर्भित करते है, जिसके द्वारा प्रतिनिधियों को चुना जता है। या जनमत संग्रह का निर्णय लिया जाता है। आधुनिक राजनीति में अधिक सर्वोत्तम राजनीतिक अभियान आम चुनावों व राज्य के प्रमिख तथा सरकार के प्रमुख प्रायः राष्ट्रपति या प्रधानमंत्री के उम्मीदवारों पर केंद्रित होते है।

अभियान के संदेश में वे विचार सम्मिलित हैं जिन्हें उम्मीदवार मतदाताओं के साथ साझा करना चाहता है। इसका उद्देश्य उन लोगों को राजनीतिक पद के लिए समर्थन देना है जो उनके विचारों से सहमत हैं। संदेश में प्रायः नीतिगत विषयों के बारे में विभिन्न बातें सम्मिलित होती है। ये बिंदु अभियान के मुख्य विचारों का सारांश देते हैं और मतदाताओं पर स्थायी प्रभाव डालने के लिए इन्हें बार–बार दोहराया जाता है। विभिन्न चुनावों में, विपक्षी दल नीतिगत या व्यक्तिगत प्रश्न उठाकर उम्मीदवार को संदेश को खराब करने का प्रयास करेगा। अधिकांश संभावित मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए अधिकांश अभियान संदेश को व्यापक रखना पसंद करते हैं। एक संदेश जो अत्यधिक संकीर्ण है वह मतदाताओं को प्रथक कर सकता है उदाहरण के लिए, 2008 के अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव में जॉन मेककेन नए मिल रूप से एक संदेश का प्रयोग किया जो उनकी देशभक्ति व राजनीतिक अनुभव पर केंद्रित था। देश पहले, बाद में राजनीतिक प्रतिष्ठान के भीतर उनकी भूमिका पर ध्यान आकर्षित करने के लिए संदेश को परिवर्तित कर दिया गया। बराक ओबामा अपने पूरे अभियान में परिवर्तन का एक सतत, सरल संदेश लेकर चले।

एक अभियान दल मुख्यतः को इस तथ्य पर विचार करना चाहिए कि अभियान के संदेश को कैसे प्रेषित व संप्रेषित किया जाए। व स्वयंसेवकों की भर्ती की जाए तथा धन जुटाया जाए। अपने

संदेशों को वितरित करते समय राजनीतिक अभियानों के लिए उपलब्ध रास्ते कानून, उपलब्ध संसाधनों और अभियान के प्रतिभागियों की कल्पना द्वारा सीमित हैं। इन तकनीकों को प्रायरू एक औपचारिक रणनीति में संयोजित किया जाता है जिसे अभियान योजना के रूप में जाना जाता है। योजना अभियान के लक्ष्य, संदेश, लक्षित दर्शकों और उपलब्ध संसाधनों को ध्यान में रखती है। अभियान सामान्य रूप से अपना संदेश पहुंचाने के साथ–साथ समर्थकों की पहचान करने का भी प्रयास करेगा।

प्रसिद्ध राजनीतिक वैज्ञानिक जोएल ब्रेडशॉ की एक अन्य आधुनिक अभियान पद्धति एक सफल अभियान रणनीति विकसित करने के लिए चार प्रमुख प्रस्ताव बताती है। सर्वप्रथम, किसी भी चुनाव में मतदाताओं को तीन समूहों में विभाजित किया जा सकता है। उम्मीदवार का आधार, प्रतिद्वंद्वी का आधार। दूसरा, पिछले चुनाव परिणाम, पंजीकृत मतदाता सूचियों के डेटा और सर्वेक्षण अनुसंधान यह निर्धारित करना संभव बनाते हैं। तीसरा, सभी लोगों का समर्थन प्राप्त करना न तो संभव है और न ही आवश्यक है। चौथा, एक बार जब कोई अभियान यह पहचान लेता है कि कैसे जोतना है, तो यह इस जीत को लाने के लिए परिस्थितियों को बनाने के लिए कार्य कर सकता है। सफल होने के लिए, अभियानों को अभियान संसाधनों – धन, समय और संदेश – को संभावित मतदाताओं के प्रमुख समूहों तक निर्देशित करना चाहिए।

इसी सदर्भ में भारत में भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस द्वारा प्रारंभ की गई भारत जोड़ों यात्रा है। जो एक जन आंदोलन के रूप से शुरू हुई। जिसका लक्ष्य दिल्ली में भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की कथित विभाजनकारी राजनीति के विरुद्ध देश को एकजुट करना है। इसे भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं सांसद राहुल गांधी व तमिलनाडु के मुख्यमंत्री मुथुवेल करुणानिधि स्टालिन द्वारा 7 सितंबर, 2022 को कन्याकुमारी में प्रमोचन किया गया था। इसे मूल्य वृद्धि, बेरोजगारी, राजनीतिक केंद्रीकरण और विशेष रूप से भय, कट्टरता की राजनीति के लड़ने के लिए बनाया गया था।

राहुल गांधी पार्टी कैडर और जनता को भारत के दक्षिणी सिरे पर कन्याकुमारी से जम्मू और कश्मीर के केंद्र शासित प्रदेश तक चलने के लिए प्रोत्साहित कर रहे थे, जो लगभग 136 दिनों में 4,080 किलोमीटर की यात्रा थी।

राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन

भाजपा ने रैली की आलोचना की और इसे परिवार बचाओ रैली कहा। रुचिकर तथ्य यह है कि ये टिप्पणियां ऐसे समय में आई हैं जब कांग्रेस अपना राष्ट्रपति चुनाव कराने की तैयारी कर रही थी। कांग्रेस ने कहा कि भाजपा यात्रा और उसके अपार जनसमर्थन से चकित है।

संयुक्त प्रगतशील गठबंधन

द्रविड मुनेत्र कड़गम ने यात्रा का समर्थन किया, एम.के. 7 सितंबर को कन्याकुमारी में यात्रा शुरू करने के लिए स्टालिन उपस्थित रहे।

राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी ने अपने नेता पी. सी. चाको के साथ यात्रा से स्वयं को दूर कर लिया और कहा कि कांग्रेस की यात्रा का उद्देश्य यह सिद्ध करना है कि यह मृत नहीं है। शिवसेना ने अपने मुखपत्र सामना के माध्यम से यात्रा का समर्थन किया और कांग्रेस की यात्रा से डरने का आरोप लगाते हुए भाजपा पर कटाक्ष किया।

आम आदमी पार्टी ने यह कहते हुए यात्रा रद्द कर दी कि इसका कोई परिणाम नहीं निकला। स्वराज इंडिया के योगेंद्र यादव भारत जोड़ी यात्रा में सम्मिलित हुए और उन्होंने यात्रा को भारत के दक्षिणायन आंदोलन के रूप में वर्णित किया, जहां दक्षिण का प्रभाव उत्तर में ले जाया जाता है। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) ने शुरू में एक ट्विटर पोस्ट में कांग्रेस की आलोचना की, जिसमें लिखा था कि ष्केरल में 18 दिन यूपी में 2 दिन। बीजेपी–आरएसएस से लड़ने का अजीब तरीका, । कांग्रेस ने निर्णय को सही ठहराते हुए कहा कि केरल दक्षिण से उत्तर तक एक वृहत राज्य है, कन्याकुमारी से केरल जाने और कर्नाटक पहुंचने में 370 किलोमीटर का समय लगता है। यदि यह दो दिन आराम के दिनों में लेती, तो उस दूरी को तय करने में 18 दिन का समय लेती। सीपीआई (एम) ने जल्द ही यात्रा पर अपना रुख नरम कर लिया, इसके महासचिव सोताराम येचुरी ने कहा, प्रत्येक पार्टी को जनता के साथ विचार–विमर्श करने का वैध अधिकार है। उन्होंने यह भी कहा कि माकपा संविधान की रक्षा के लिए विपक्षी दलों को एक साथ लाने के प्रयासों में सम्मिलित होगी।

विवाद

गुजरात व हिमाचल प्रदेश के चुनावी राज्यों से नहीं गुजरने के लिए भारत जोड़ो यात्रा की आलोचना की गई है। कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने निर्णय का बचाव करते हुए कहा कि इसके

पीछे का कारण यह था कि कन्याकुमारी से गुजरात पहुंचने में 90–95 दिन लगेंगे, चुनाव से पहले पहुंचना असंभव होगा, हिमाचल प्रदेश के साथ भी। उन्होंने यह भी कहा कि जिन राज्यों में यात्रा नहीं हो पाएगी, वहां वह और कांग्रेस के एक अन्य वरिष्ठ नेता दिग्विजय सिंह सहित कई अन्य लोग उनसे मिलने जाएंगे।

कोल्लम में कांग्रेस के 3 कार्यकर्ताओं ने एक रेहड़ी–पटरी वाले से 2000 रुपये का चंदा मांगा, जिसमें उन्होंने 500 रुपये दिए। इसके पश्चात् कार्यकर्ताओं ने वेंडर की तौल मशीन और सब्जियों को क्षतिग्रस्त कर दिया। हंगामे के पश्चात् कार्यकर्ताओं को तुरंत कांग्रेस पार्टी से निलंबित कर दिया गया। केरल प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रमुख के. सुधाकरन ने इस घटना पर दुख व्यक्त करते हुए इसे अस्वीकार्य और अक्षम्य बताया।

23 सितंबर को, कांग्रेस ने त्रिशूर में यात्रा को आराम के दिन के लिए रोक दिया, जो मुख्यतः वह दिन था जब राष्ट्रीय एजेंसी के प्रतिउत्तर में, एक इस्लामी संगठन, पोपुलर फ्रन्ट ऑफ इंडिया (पीएफआई) ने केरल में बंद का आह्वान किया था। भाजपा नेता कपिल मिश्र ने यात्रा के इस ठहराव को बंद से जोड़ा और आरोप लगाया कि कांग्रेस पीएफआई के साथ एकजुटता में है। कांग्रेस ने पलटवार करते हुए कहा कि यह विराम पूर्व–निर्धारित था और पीएफआई से पूर्ण रूप से असंबंधित था। राहुल गांधी ने यह भी कहा कि सभी प्रकार की सांप्रदायिकता के प्रति जीरो टॉलरेंस होनी चाहिए।

अतः कहा जा सकता है मतदाताओं को प्रभावित करना राजनीतिक अभियान का सार है।

♦♦♦♦♦

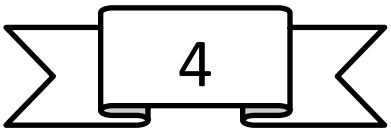

भारतीय सांस्कृतिक उत्थान बनाम राजनीतिक अभियान

उत्तम त्रिपाठी

विद्यार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

भारतीय सांस्कृतिक उत्थान बनाम राजनीतिक अभियान का विषय वर्तमान समाज सहित राजनीति में जितना इस समय चर्चा का केंद्र है, प्रायः कभी नहीं रहा। यदि यह विषय मात्र कोरी कल्पना से संबंधित नहीं, अपितु राजनीतिक अभियान में यह निर्णायक भूमिका को भी अदा करने में सक्षम है। किंतु इससे पूर्व कि हम इस विषय के वाद प्रतिवाद को समझने का प्रयास करना अत्यंत आवश्यक है कि हम यह स्पष्ट करें कि भारतीय संस्कृति है क्या? जिसके उत्थान का विचार–विमर्श हो रहा है। किसी भी राष्ट्र या देश की संस्कृति उस देश की स्थिति, व्यक्तियों के संबंध, विविधताओं, समानता आदि से निर्मित होती है। इन तत्वों के मध्य में कुछ ऐस तत्व भी होते हैं जो सभी व्यक्तियों में समान रूप से सम्मिलित होते हैं और इसी के माध्यम से राष्ट्र का निर्माण होता है।

संस्कृति का प्रत्यक्षतः अर्थ यही है कि आप अपने भीतर विभिन्न नए तत्वों जैसे व्यक्ति, संस्कृति, समस्याएं, प्राणी जगत आदि के बारे में कैसा विचार रखते हैं तथा कैसा व्यवहार करते हैं। इसी संस्कृति में हमारी पहचान, निष्ठाएं, आदर्श आदि का भी समावेशन होता है। हम उनका सम्मान करते हैं तथा रक्षा हेतु संघर्ष भी करते हैं। किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि हम रूढ़ीवादी होकर ऐसा कर रहे हैं। अपितु ऐसा हम अपने ज्ञान व विकास के लिए करते हैं। उन तत्वों को संजोए रखते हैं जो आज भी प्रासंगिक हैं। वसुधैव कुटुंबकम ऐसा ही तत्व है।

इसलिए परिवर्तनशीलता एक आवश्यक पड़ाव है जो प्रत्येक समाज में पाया जाता है। यह समय के साथ आवश्यक भी होता है। संस्कृतियों के तत्वों में एक सार्वभौमिक और समय समग्र मानववादी विचार भी होता है। इसी अनुरूप इन सांस्कृतिक पक्षों के पक्ष और विपक्ष पर कई बार सकारात्मक और नकारात्मक संकेत भी मिलते हैं। यह संकेत अक्सर राजनीतिक अभियानों के गर्त से निकलते हैं। राजनीतिक अभियानों का प्रयोग लोगों को आकर्षित करने के लिए, मोब्लाइज करने के लिए होता है। यह प्रतिनिधि द्वारा या पार्टी द्वारा या नेता द्वारा होता रहता है।

इन अभियानों के माध्यम से सामान्यतः एक विशेष प्रकार की राजनीति के अंतर्गत और स्व के लाभ हेतु सांस्कृतिक तत्वों का प्रयोग कर लिया जाता है। किन्तु हमे यह समझना चाहिए कि हम जिस समाज में रहते हैं वहां लोगों को उनके आदर्शों के प्रति सम्मान होता है, वो उनसे प्रेरणा भी ग्रहण करते हैं और गौरवान्वित महसूस करते हैं। हम समाज में भगवान राम के स्पष्ट प्रभाव देखते हैं। हम उनके कार्यों और व्यवहार को आदर्श स्वरूप स्थापित करते हैं। श्री राम, भीष्म पितामह, मनु, चाणक्य, सम्राट अशोक आदि सभी के लिए हम समर्पित भाव से सम्मानजनक होते हैं। हम संस्कृति के शब्दों और लाइनों को स्पर्श करते हैं। अनेक भावनाओं और भाषाओं के प्रति हमारा आदर आदि सब सांस्कृतिक हिस्सों का ही प्रकट रूप है।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परंपरा मात्र कर्मकांड तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें वैज्ञानिक सोच का भी तत्व है। हमें इसका सबसे अच्छा उदाहरण ऋषि कणाद का वैशेषिक दर्शन है। इसमें इन्होंने परमाणु के बारे में अपने वैज्ञानिक विचार दिए हैं। पतंजलि ने योग पर बल दिया जो आज वश्विक महत्व का विषय बन गया है। ऐसे अनेकों उदाहरण हमारे संस्कृति में मौजूद है।

इसके अतिरिक्त भारतीय संस्कृति का व्यापक प्रभाव हमारे सरकारी नीतियों व कार्यों में भी होता है। एक उदाहरण के रूप में सरकारी नीति पर सांस्कृतिक प्रभाव देखते हैं–

विश्व में सबसे बड़ी जनसंख्या भारत की है और इस जनसंख्या के साथ राजनीतिक स्थायित्व व प्रतिनिधि सरकारे चल रही हैं। इसी कारण भारत को महान लोकतांत्रिक देशों में सबसे ऊपर की कोटि में रखा जाता है। लोकतांत्रिक देशों के विशेष लक्षणों में शांति भी सम्मिलित है। शांति का अर्थ शांत रहने से नहीं है (चुपचाप)। अपितु समरसता इसका केंद्र बिंदु हैं। शांति का विचार–विमर्श बहुत ही आवश्यक है। क्योंकि प्राचीन समय से ही यह भारत के मूल में रहा है। विदेशियों द्वारा भारत को इंदु भी पुकारा जाता था। इंदु का अर्थ चंद्रमा होता है जो शांति व सरल भाव का परिचायक है। यही सरल भाव आज के भारत के विभिन्न नीतियों में भी दिखता है। जैसे भारत के परमाणु परीक्षण को शांति हेतु परीक्षा माना जाता है क्योंकि भारत ने कुछ सिद्धांत घोषित किए हैं जो शांति होने की गवाही देते हैं। यह सिद्धांत दव–पितेज नेम है। इसके अतिरिक्त हिंद महासागर के तटीय राज्यों और भारत अपने पड़ोसी राज्यों के साथ सांस्कृतिक संबंधों जो भुला दिए गए हैं की खोज में लग गया है। स्वतंत्रता के पश्चात से ही भारत ने अब तक किसी देश पर आक्रमण नहीं किया है, ना ही विस्तारवादी नीति का रुख अपनाया है। यदि हम देखें कि ऐसी शांति का आधार क्या है तो हम पाते हैं कि यह भारतीय ज्ञान परंपरा का गौरवमयी प्रभाव है, कि हम अंतर्मन से इस बात को सहर्ष स्वीकार करते हैं कि सभी को शांति से रहना चाहिए। जिस

प्रकार परिवार में शांति के गुणों को सिंचित किया जाता है उसी भाव का विस्तार भारत ने मात्र अपने लिए नहीं, अपितु विश्व के लिए किया है और वसुधैव कुटुंबकम के विचार को आगे बढ़ाया है। यह भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रभाव अपने विचारों में वैश्विकता को ओझल न होन दिया। यह भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक प्रभाव है। इस प्रभाव को कौटिल्य ने यथार्थवादी नेत्रों से देखा, कूटनीति की चर्चा की किन्तु उन्होंने कभी भी आज तक राजा हेतु विस्तारवादी नीति (नकारात्मक) का सुझाव नहीं दिया। प्रजा के कल्याण को सर्वोपरि रखा। विश्व में यदि कोई भारतीय व्यक्ति कहीं घूमने जाता है और जब वह बताता है कि वह भारतीय है तो सामने स्थित व्यक्ति उस के संदर्भ में शांति व अच्छे होने का पूर्वाग्रह बांध लेता है। यह प्रभाव भारतीय सांस्कृतिक परंपरा का है। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51 में अंतरराष्ट्रीय शांति व समझौतों को बढ़ावा देने का आह्वान किया गया है। अंतरराष्ट्रीय शांति हेतु स्पष्ट वातावरण पाने हेतु संविधान में सूचियों के विषयों पर स्पष्ट नियमों का भी वर्णन है जिससे कि किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो। यदि अंतरराष्ट्रीय शांति व समझौते में राज्य सूची के विषय बाधित होंगे तो वह उस सीमा तक संघ सूची के विषय माने जाएंगे। संघीय सूची की प्रविष्टि 13 अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिक और सांस्कृतिक संबंधों पर बल देती है। यह महत्वपूर्ण बात है कि भारतीय सांस्कृतिक तत्वों को संविधान निर्माताओं ने उचित स्थान व महत्त्व दिया।

तो इस प्रकार हम समझ सकते हैं कि किस प्रकार संस्कृति का व्यापक प्रभाव है। इस प्रभाव के कारण भारत की छवि व्यापक रूप से एक मित्र की तरह है। प्रायरू यही कारण है कि एक वृहद भारतीय सांस्कृतिक उत्थान का विचार–विमर्श होता रहता है। राजनीतिक अभियान में प्रायरू सांस्कृतिक तत्वों के माध्यम से लोगों के मध्य नेतागण प्रभावकारी भूमिकाओं को अदा करते हैं। वर्तमान भारतीय परिदृश्य में एक बहुत बड़ा परिवर्तन काल निरंतर है, जो भारतीय सांस्कृतिक अस्मिता पर प्रमुख बल देता है। आत्मनिर्भर भारत के साथ–साथ एक बड़ा परिवर्तन हमें मूल्यों के चढ़ाव और सांस्कृतिक उत्थान के रूप में दिख रहा है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जिस प्रकार वर्तमान सत्तारूढ़ दल इस ओर अग्रसर है एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन राजनीतिक अभियान में दिख रहा है और दिखेगा भी। जिससे अब सांस्कृतिक तत्वों की भरमार रहेगी।

किन्तु यदि हम राजनीतिक अभियान को थोड़ा दूर रखें, फिर भी हमें राजनीति और राजनीतिक प्रक्रियाओं में सांस्कृतिक तत्वों का समावेशन चाहिए। यहां तक की समाज में भी हमें ऐसे तत्व चाहिए तो यह भी समझना आवश्यक है कि वर्तमान में जो समय चल रहा है उसमें कई सारी कमियां बुराइयां और बाहरी अप्रत्यक्ष विचारों का नकारात्मक प्रभाव है। बाहरी प्रभाव से अर्थ नव–उपनिवेशवाद जैसी या अत्यधिक आधुनिकीकरण जैसी विचारधारा से हैं। यह नहीं है कि

आधुनिकीकरण सदैव हानिकारक होता है किन्तु यह जब किसी देश की पहचान, प्रमुख विचारों और मान्यताओं को ठेस पहुंचाता है तो वह हानिकारक होता है। यह केवल अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ही नहीं अपितु एक देश के अंदर भी होता है। जब यह एक देश के अंदर होता है तो कई बार पहचान की राजनीति के नाम पर इसका प्रयोग होता है। यद्यपि यह इसका नकारात्मक पहलू है। वर्तमान भारतीय समाज में अत्यधिक परिवर्तन हो रहे हैं और यह परिवर्तन संक्रमण कालीन (बीच की स्थिति) या समय में हो रहे हैं। वर्तमान समाज में नैतिकता ह्यास, बलात्कार, लूट, भ्रष्टाचार, स्वार्थ भौतिकता पर बल आदि बढ़ गया है। क्या यह घटनाएं लोकतंत्र और संस्कृति को बल देंगे? उत्तर है नहीं। एक शिक्षित और सांस्कृतिक व्यक्ति ऐसा कभी नहीं कर सकता। वास्तव में यह घटनाएं और प्रवृतियां भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को विनाश कर रही हैं और देश को कमजोर बना रही है। इससे सिद्ध होता है कि हमने औपचारिक तौर पर शिक्षा की व्यवस्था बहुत की, किन्तु इसका प्रभाव व्यक्ति के व्यक्तित्व पर नहीं पड़ पा रहा है।

वर्तमान समय में सांस्कृतिक मूल्यों व तत्वों की आवश्यकता राजनीति में भी है। क्योंकि राजनीतिक भ्रष्टाचार स्वयं में बहुत बड़ी समस्या बनता जा रहा है। राजनीतिक भ्रष्टाचार से आशय है। जनप्रतिनिधियों (नेता) द्वारा या पार्टी द्वारा किए गए उन कृत्यों से है जो अलोकतांत्रिक और जनता के हित में ना होकर व्यक्तिगत हित पर आधारित होता है। यह भ्रष्टाचार प्रायरू राजनीतिक अभियान से ही प्रारंभ हो जाता है। चुनाव के समय से ही भ्रष्टाचार प्रारंभ हो जाता है। चुनावी भ्रष्टाचार से आशय हैं जब गलत माध्यम से और गलत विचार से कोई व्यक्ति अपनी स्थिति को राजनीतिक सदस्य के रूप में बदल देता है और इस स्थिति के लिए सामूहिक नहीं अपितु व्यक्तिगत हित का ध्यान रखता है। इस प्रकार भ्रष्टाचार के विभिन्न माध्यम हैं। प्रायः चुनाव के समय पद के उम्मीदवार हेतु परिवारवाद और धन का प्रभाव बन जाता है। उम्मीदवार चुनाव आयोग द्वारा निश्चित किए गए नियमों का सही उत्तर नहीं देते। धन संपत्ति का विवरण भी गलत देते हैं। शिक्षा की जानकारी नहीं देते हैं। इसके अतिरिक्त मात्र जातिगत लाभ हेतु उम्मीदवार अपनी योग्यता को ध्यान में न रखते हुए चुनाव में कूद जाते हैं। कई बार उम्मीदवार 2 सीटों से चुनाव लड़ते हैं, जिसके कारण चुनावी खर्चों में बढ़ोतरी होती है। सबसे बड़ी समस्या राजनितिक आभियान के समय नैतिकता का अभाव है। प्रायः भाषण देते समय नेतागण अपनी गरिमा भूल जाते हैं। जबकि ऐसा पहले नहीं था। किन्तु अब मात्र मुद्दा बनाने व पार्टी को कमजोर बनाने हेतु कैसी भी बातें कर दी जाती हैं। वर्तमान में बड़े स्तर पर दल अपनी योग्यता या विजय पर कम ध्यान देते हैं और विपक्षी पार्टी को तोड़ने और कमजोर करने पर विशेष बल देते हैं। ऐसे में वे अगर विपक्षी पार्टी को कमजोर न कर पाए तो स्वयं पार्टी के रूप में कमजोर हो जाते हैं। लोकसभा में पहले यह स्थिति थी कि 2014 और

2019 के चुनाव में किसी भी पार्टी को विपक्षी पार्टी हेतु न्यूनतम 55 सीटें भी नहीं मिली। ऐसे में विपक्षी नेता प्रतिपक्ष को नियुक्त करने का प्रावधान नहीं था। हालाकि लोकसभा सचिवालय ने कहा है कि विपक्ष का नेता नियुक्त करने के लिए सीटों की न्यूनतम प्रतिशत की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार सांस्कृतिक मूल्यों से पृथक होकर राजनीतिक अभियान गलत दिखाई देता है। विचारधारा को कट्टर रूप में पेश करके भी नेता या उसके समर्थक गलत कार्य करते हैं। हाल में कांग्रेस की भारत जोड़ो यात्रा के दौरान केरल में सड़क के किनारे लगी भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों और आदर्शों के चित्र में सावरकर की फोटो को गांधी जी के फोटो से ढक दिया गया। क्या यह उचित है? क्या यह मात्र विचारधारा के प्रति कट्टरता का प्रतीक नहीं है? तो अंततः में ऐसी मानसिकता का निर्माण जब राजनीतिक अभियान में दिखेगा तो किस प्रकार की भारत की राजनीति होगी, उसको समझा जा सकता है। प्रायः इसलिए सांस्कृतिक उत्थान और राजनीतिक अभियान में कोई विरोध नहीं है तथा यह एक दूसरे के सहायक भी हैं।

निष्कर्षः–

अंततः हम पाते हैं कि भारतीय सांस्कृतिक उत्थान और राजनीतिक अभियान में परस्पर विरोध नहीं है। अपितु यह तब गलत होता है जब मात्र सांस्कृतिक उत्थान के नाम पर नकारात्मक लाभ उठाने का प्रयास होती है। राजनीतिक अभियान में सांस्कृतिक तत्वों का समावेश होना चाहिए। ताकि मूल्यां और नैतिक विचारों के माध्यम से आम जनता को गहराई के साथ समझा जा सके और समझाया भी जा सके। हमारी संस्कृति हमें काफी कुछ दे सकती है। किन्तु फिर भी मात्र औपचारिकताओं, दिखावे और परिवर्तन के नाम पर हम अपनी संस्कृति को भुला देते हैं। आज हम सामाजिक समानता, न्याय, मूल्य संवर्धन आदि को पाना तो चाहते हैं, किन्तु हम दूसरों से ऐसी आशा करते हैं, जबकि आशा रखना हर समय परिस्थिति में उचित नहीं होता है। व्यक्तियों को व्यक्तिगत स्तर पर व्यक्तियों से सहयोग करना होगा। लोगों को यह बताया जाए कि वो आज जिस रूप में खड़े हैं वह एक आयामी विश्व का प्रभाव नहीं है, अपितु सहयोग और प्यार का परिणाम है। इसी प्रकार हमें संस्कृति में प्रकाश डालना होगा।

भारतीय सांस्कृतिक उत्थान और राजनीतिक अभियान से विकास को ओर भी शीघ्रता मिलेगी। हम जिस वातावरण में रहते हैं उसमें कई सारी कमियाँ हैं। इसका अर्थ है कि हम चाहते हैं कि सभी अच्छे से रहें, सौहार्द बनाए रखे, नैतिक होने का परिचय दें। किन्तु यह विचार हम अपने ऊपर लागू नहीं कर पाते हैं। गांधीजी के विचार है कि जो परिवर्तन आप दूसरों में देखना चाहते हैं

आप उसे पहले अपने ऊपर लागू करें। यह पंक्ति उस आरोपण की स्थिति को हटाना चाहती है जिसमें हम सभी एक दूसरे पर आरोप लगाते हैं।

वर्तमान भारत सांस्कृतिक तत्वों की ओर दृष्टि डाल रहा है। अन्य देशों के साथ भुला दिए गए, सांस्कृतिक संबंधों को पुनः उजागर करना चाहता है। इसलिए इस परिवर्तन के समय में आवश्यकता है कि हम मिलकर अपने आदर्शों और ज्ञान परंपरा को जीवित रखे। यह भारतीय अस्मिता है। याद रखें– जब कोई देश अपनी अस्मिता का संरक्षण करता है तो वास्तव में वह राष्ट्र निर्माण हेतु अग्रसर है। इसलिए भारतीय ज्ञान परंपरा की महत्वकांक्षाओ पर अधिक बल दिया जाना चाहिए और यह मात्र व्यक्तिगत ना रहे अपितु इसका विस्तार सामुहिकता में होना चाहिए।

♦♦♦♦♦

5

भारतीय संस्कृति बनाम् भारत जोड़ो यात्रा

सर्विष्ठा जाट

विद्यार्थी, हिंदी विभाग, ग्वालियर विश्वविद्यालय

वर्तमान समय में वैश्विक परिदृश्य पर नजर डाले तो हमें विश्व स्तर पर कई क्षेत्रों में राजनीतिक अस्थिरता, मतभेद, जनआंदोलन, असामंजस्य की स्थिति दिखाई देती है। जिससे भारत भी अछूता नहीं है। हाल ही में हमें विपक्ष (कांग्रेस) द्वारा एक अभियान देखने को मिला जिसे 'भारत जोड़ो यात्रा' कहा गया जिसे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा शुरू किया गया एक जन आंदोलन माना गया जिसका उद्देश्य केन्द्रीय सरकार की कथित विभाजनकारी राजनीति के खिलाफ व देश में आर्थिक समस्याएँ और सामाजिक असामंजस्य के खिलाफ देश को एक–जूट करना है।

इस 'भारत जोड़ो आंदोलन' की शुरूआत कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुत गांधी और तमिलनाडु के मुख्यमंत्री मुधुबेल करूणानिधि स्टालिन द्वारा 7 सितम्बर 2022 को कन्याकुमारी से शुरू किया गया। जो लगभग 136 दिन व 4080 किमी की जम्मूकष्मीर तक चलने वाली पैदल यात्रा थी जिसे कन्द्र सरकार के खिलाफ विपक्ष द्वारा मूल्यवृद्धि, बेरोजगारी, राजनीतिक केन्द्रीकरण और विशेष रूप से भय कट्टरता के खिलाफ लड़ने के लिए बनाया गया था।

इस राजनीतिक जनआंदोलन में हमें पग–पग पर उस भारतीय संस्कृति के उत्थान की विषेशताओं, कारणों, संस्कारो आदि का पता चला जिसने भारतीय संस्कृति की विषाल जीवंतता को बनाए रखा। विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में गिनी जाने वाली भारतीय संस्कृति को अगर हम इस नजरिये से देखें तो पाते हैं कि कैसे समकालीन सभ्यताओं के क्षीण होने पर भी भारतीय संस्कृति आज भी अपनी जीवंतता का परिचय स्वयं देती है। जिसे हम निम्न बिन्दुओं के माध्यम से देख सकते हैं।

1. इस यात्रा के दौरान हमें विशाल भारत के विभिन्न क्षेत्रों के विभिन्न समुदाओं, भिन्न–भिन्न जाति, भाषा, वेशभूषा आदि लोगों से सम्पर्क स्थापित हुआ, किन्तु जो बात कन्याकुमारी से जम्मूकश्मीर तक हमने भारतीयों एक देखी वह थी उनकी विभिन्नता में भी समानता, उमंगता, हर्ष, उल्लास जो कि भारतीय संस्कृति की विशिष्टता का परिचायक है।

2. इस यात्रा के दौरान कांग्रेस के अलावा कई प्रतिभागी जैसे पवन खेरा अध्यक्ष (केरल के पूर्व मुख्यमंत्री), सचिन पायलट आदि तो वहीं कई भारतीय राजनीतिक दल इससे दूरी बना के रहे, सबने अपनी–अपनी राय रखी जो कि एक लोकतांत्रिक देश में उसकी लोकतांत्रिक संस्कृति को बचाए रखने के लिए बहुत जरूरी है।
3. इस यात्रा के दौरान हमें विभिन्न राज्यों की स्थानीय संस्कृति की झलक भी दिखाई दी, लोगों में अपने–अपने क्षेत्रों में अपनी लोक संस्कृति में इसका अभिवादन किया जो कि 'अतिथि देवो भव' की भारतीय परंपरा रही है।
4. इसके अलावा एक और बात है जिसने लोगों का ध्यान अपनी और आकर्षित किया है, वह है इस यात्रा को लेकर केन्द्र सरकार का रूख। कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा सुरक्षा नियमों का उल्लंघन करने व तमाम प्रकार के हथकण्डो द्वारा संघ व केन्द्र सरकार को उकसाने के भरसक प्रयास हुए, लेकिन ऐसे वातावरण जब ऐसी गतिविधियाँ हो रही हों और दूसरी ओर भारत G20 की मेजबानी की तैयारी कर रहा हो दोनों ही अभियान को व्यापकता प्रदान करने का कार्य केन्द्र सरकार की दूसरी ''भारत जोड़ो यात्रा'' मानी जा रही है। इस सहिष्णुता और शांति के बीज हमारी संस्कृति हजारों सालो से अपने दामन में छिपाकर चली आ रही है जिसकी झलक हमें समय–समय पर देखने को मिलती रहती है। इन्ही सब कारणों से भरतीय संस्कृति अपनी समकालीन प्राचीनतम संस्कृति को छोड़कर (जो क्षीण हो गई है) आज भी गतिशील है।

   ''यूनान–ओ–मिस्त्र–ओ–रोमां,
   सब गिर गये जहाँ से अब तक मगर है बाकी नाम–ओ–निशौ हमारा''

कांग्रेस की यह ''भारत जोड़ो यात्रा'' भारत का पहला राजनीति अभियान नहीं है। गांधी, पदयात्रा और सत्यागृह की राजनीति 1930 में नमक सत्यागृह ओर दाण्डीयात्रा से करते है। पूर्व प्रधानमंत्री चन्द्रशेखर ने भी 1983 में कन्याकुमारी से दिल्ली की पदयात्रा की थी। दिग्विजय सिंह नर्मदा परिकमा से पदयात्रा की राजनीति ही साधते है हालांकि मध्यप्रदेश में कमलनाथ सरकर ज्यादा दिन न चल सकी पर मार्ग का विधानसभा से सम्पर्क अवश्य हुआ। आंध्रप्रदेश में जगन मोहन रेड्डी ने अपने पेतृक गाँव से 3600 किमी लम्बी पद यात्रा की इसी 11 महीने के जनसम्पर्क अभियान के बूते उन्हे सत्ता मिली।

साथ ही 1990 में लालकृष्ण आडवाणी जी की रथ यात्रा व 1991 में मुरली मनोहर जोशी जी की एकता यात्रा इस संदर्भ में महत्वपूर्ण जनसंपर्क आन्दोलन, उपयुक्त उदाहरणों से पता चलता है कि राजा का प्रजा से सम्पर्क होना कितना आवश्यक व लाभदायक है हमारी संस्कृति में कहा गया है कि ''एक संतुष्ट प्रजा पर ही कोई राजा राज कर सकता है'' इसलिए जनसम्पर्क शासकों के लिए व एक स्वास्थ्य लोकतंत्र के लिए बहुत जरूरी है।

भारतीय संस्कृति गतिशील संस्कृति है और यह मानव सभ्यता की शुरूआत मानी जाती है। जो सिंधु घाटी की रहस्यमयी लोगसंस्कृति से शुरू होती है और दक्षिणी इलाको में किसान समुदाय तक जाती है। भारतीय संस्कृति के बारे में पं मदनमोहन मालवीय का कहना है कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति की विशालता और इसकी महत्ता तो सम्पूर्ण मानव के साथ तादाम्य स्थपित करने अर्थात् 'वसुधैव कुटुंबकम्' की पवित्र भावना में निहित है। इसी संस्कृति की वर्तमान में मुख्य विशेषताओं जो उभर कर आ रही है वह है लोकतांत्रिक भावना जो हमें ''भारत जाड़ो यात्रा'' में पक्ष–विपक्ष जनसमुदाय सभी में देखने को मिलती है वैसे तो विपक्ष द्वारा ऐसी यात्राएँ सम्पन्न कराना स्वयं एक लोकतांत्रिक मूल्य है लेकिन जब सम्पूर्ण देश के लोग राजनीतिक दल इसमें प्रतिकयाएँ दे तो इसकी महत्ता और भी बढ़ जाती है जैसे–

विभिन्न राजनीतिक प्रतिकियाएँ–

- राष्ट्रीय जनतांत्रिक गणबंधन– इसने इसे 'परिवार बचाओ दली कहा' दिलचस्प बात यह है कि प्रतिकिया ऐसे समय में आई जब कांग्रेस अपना राष्ट्रपति चुनाव कराने की तैयारी में थी।
- संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन ने यात्रा का तहेदील से स्वागत किया वही राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी ने अपने नेता PC चाको के साथ यात्रा से खूद को दूर रखा और कहा कि– ''कांग्रेस का उद्देश्य यह साबित करना है कि यह मृत नही है।''
- शिवसैना ने अपने मुख्य पत्र 'सामना' के माध्यम से यात्रा का समर्थन किया और कांग्रेस की यात्रा से डरने का आरोप लगाते हुए भाजपा पर कटाक्ष किया।
- आम आदमी पार्टी ने यह कहते हुए, यात्रा रद्द कर दी कि इसका कोई नतीजा नहीं निकलेगा। वही स्वराज इंडिया के योगेन्द्र यादव भारत जोड़ो आंदोलन में शामिल हुए और उन्होने यात्रा को भारत के दक्षिणायन आंदोलन के रूप में वर्णित किया।

इस प्रकार विभिन्न प्रतिकियाओं, वाद–विवादो, जनआंदोलनो से स्वस्थ लोकतंत्र की संस्कृति की झलक दिखाई देती है जो कि भारतीय संस्कृति के आधार स्तम्भों मे से एक है।

♦♦♦♦♦

Aiming High, Touching Sky

सी जी एस

वैश्विक अध्ययन केंद्र

(पूर्वकालिक विकासशील राज्य शोध केंद्र)

अकादमिक अनुसंधान केंद्र भवन

गुरु तेग बहादुर मार्ग

दिल्ली विश्वविद्यालय

दिल्ली– 110007